गौतम बुद्ध महाविद्यालय

सम्बद्ध-सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

पचपेड़वा, सांगठ, संतकबीर नगर (उ.प्र.)

(शिक्षा संकाय)

~~[illegible]~~

सत्र : 2025-2026 B-Ed- First year

ज्ञान एवं पाठ्यक्रम (असाइनमेन्ट वर्क)

Knowledge and curriculumn

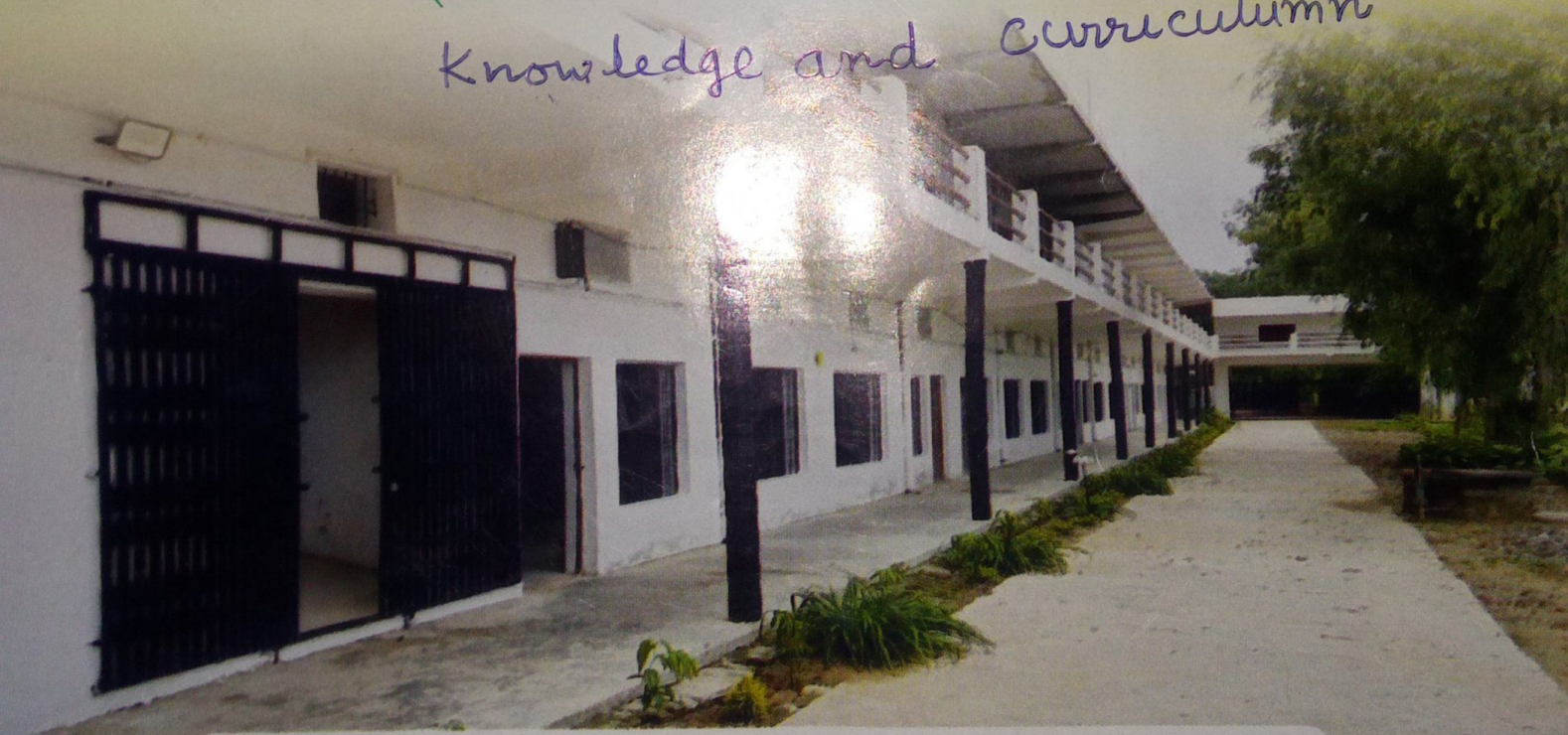

छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका का नाम Assignment

शिक्षण विषय Knowledge and Curriculumn

महाविद्यालय अनुक्रमांक

विश्वविद्यालय द्वारा आवंटित अनुक्रमांक

ion-1-

Examine Comprehensively the characteristics of knowledge as articulated in Idealism, emphasizing its significance, essence, and indispensability.

(आदर्शवाद में वर्णित ज्ञान की विशेषताओं का व्यापक रूप से विश्लेषण करें, इसके महत्त्व, सार और अनिवार्यता पर विशद चर्चा करें।)

'आदर्शवाद' एक दार्शनिक सिद्धान्त है, जो मानता है कि वास्तविकता या सत्य, विचारो, अवधारणाओं या मानसिक संरचनाओं से उत्पन्न होता है न कि भौतिक वस्तुओं से। इसे दूसरे शब्दो में यह भी कहा जासकता है कि जो कुछ भी हम देखते है, महसूस करते है या अनुभव करते है वह सब हमारे मन की एक रचना है। 'आदर्शवाद' शब्द अंग्रेजी के 'आइडियलिज्म' शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। आइडियलिज्म आइडिया शब्द से निर्मित है। आइडिया का अर्थ विचार होता है पर विचारवाद के स्थान पर आदर्शवाद शब्द ही सर्वजन ग्राह्य एवं सर्वप्रचलित है। काव्य या साहित्य में आदर्शवाद शब्द का प्रचार-प्रसार है।

आदर्शवाद में बाह्य सुखो की अपेक्षा आत्मिक सुख को ही सर्वोपरि समझा एवं माना जाता है; क्योकि बाह्य सुखों से मनुष्य को कभी सन्तुष्टि नही मिलती। फलत: आन्तरिक सुख-शान्ति की खोज आवश्यक हो जाती है। प्राचीन काल के प्रमुख आदर्शवादी दार्शनिकों में पाश्चात्य परम्परा से प्लेटो (आदर्शवाद के जनक) सुकरात तथा अरस्तू आदि है,

वही भारतीय-परम्परा से उपनिषदो के ऋषि, शंकराचार्य योगाचार बौद्ध दार्शनिक (वसुबंधु, असंग) प्रमुख है। ये दार्शनिक भौतिक जगत के बजाए विचारो, चेतना और आध्यात्मिक वास्तविकता को अन्तिम सत्य मानते थे।

❊ आदर्शवाद में वर्णित ज्ञान की प्रवृत्तिया अथवा विशेषताएँ ❊

आदर्शवाद में वर्णित ज्ञान की प्रवृत्तियाँ या विशेषताएं निम्न लिखित है:-

1- आध्यात्मिक व मानसिक सत्य-

आदर्शवादी ज्ञान भौतिक जगत की तुलना में आध्यात्मिक जगत को अधिक महत्व देता है। उनके अनुसार ज्ञान आत्मा और परमात्मा के संबंध को समझने की प्रक्रिया है।

2. शाश्वत व सार्वभौमिक मूल्य :-

आदर्शवादियों के अनुसार ज्ञान शाश्वत है जो देश और काल से परे है, इसमें सत्य, शिव और सुंदर जैसे शाश्वत मूल्यों को ~~समावेशित~~ समावेशित किया जाता है। इनके अनुसार 'सत्य' (Truth) सदैव अनित्य है, जिसे कभी नष्ट नही किया जा सकता है।

3- आत्म-साक्षात्कार एवं आत्म अनुभूति-

आदर्शवाद के अनुसार ज्ञान का अन्तिम उद्देश्य स्वयं को जानना या

आत्मानुभूति प्राप्त करना है। यह व्यक्ति को उसके वास्तविक स्वरूप को पहचानने में मदद करता है। आत्मानुभूति के सन्दर्भ में बौद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा गौतम बुद्ध का दृष्टिकोण भी अवलोकनीय है वह जिज्ञासुओं को अपने अन्दर आत्मदीपो भव अर्थात अपने आत्मा को ही अपना दीपक अर्थात पथ प्रदर्शक बनाओं की बात कहते है। आत्म साक्षात्कार सभी दर्शनो। विचारों का मूल रहा है।

4. विवेक और तर्क द्वारा प्राप्त - आदर्शवाद के अनुसार ज्ञान केवल संवेदी अनुभवों से नही अपितु तर्क, चिन्तन मनन और अन्तर्दृष्टि के द्वारा प्राप्त प्राप्त किया जाता है।

5. मानविकी पर जोर — आदर्शवादी पाठ्यक्रम में ज्ञान के रुप में साहित्य, दर्शन, धर्म, संगीत और इतिहास जैसे विषयो को शामिल किया जाता है, जो नैतिकता और आध्यात्मिक विकास में सहायक होते है।

6. मन-केन्द्रित और सहज - आदर्शवाद के अनुसार ज्ञान एक आन्तरिक मानसिक गतिविधि है न कि कोई बाहरी खोज। इसे अक्सर मानव आत्मा में पहले से ही निहित ज्ञान को याद करने की प्रक्रिया माना जाता है। यह अवधारणा 'प्लेटो' द्वारा समर्थित है।

7. इंद्रियो से स्वतन्त्र - आदर्शवादी विचारको के अनुसार

ज्ञान इन्द्रिय अनुभव से स्वतन्त्र है; क्योंकि इन्द्रिया अक्सर भ्रामक और परिवर्तनशील होती है।

संक्षेप में, आदर्शवादी ज्ञान का उद्देश्य व्यक्ति के चरित्र का विकास, उसे नैतिक बनाना, और शाश्वत सत्य से परिचित कराना है।

∴ महत्व ∴
(Significance)

आदर्शवादी विचारधारा का प्रभाव प्राचीन काल से ही साहित्य पर रहा है। 'साहित्य' शब्द जिस अर्थ में है जिसमें 'हित' की भावना निहित है, वही साहित्य है, उस अर्थ का, आदर्शवाद विशेष रूप से बोध कराता है। आदर्शवाद के अभाव में साहित्य महत्वहीन प्रतीत होता है। दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र कोई भी इससे अछूता नही है। आदर्शवाद ही एक ऐसी उदात्त विचारधारा है, जो प्रत्येक दशा में मानव-जीवन के कल्याण और सृजनशीलता का निर्देशन एवं समर्थन करता है। इस तरह भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य जगत में आदर्शवाद अपने विविध रूपों में महत्वपूर्ण है। अन्य विचारधाराओं की अपेक्षा यह अत्यन्त प्राचीन भी है जिसका प्रमाण प्राचीन कालीन साहित्य से देखा जा सकता है। पाश्चात्य विचारको ने आलोचना के आदर्शात्मक रूप को स्वीकार किया था।

लोंजाइनस का औदात्यवाद इसी आदर्शवाद का प्रतिरूप है। आदर्शवाद जीवन को अपेक्षाकृत उच्चस्तर

पर कल्पित कर संभावित जीवन के उज्ज्वल भविष्य का स्वरूप- निर्देशन करता है। इस तरह आदर्शवाद का सम्बन्ध मानव जीवन के सर्वतोन्मुखी विकास से है तथा एक शाश्वत विचारधारा के रूप में आज भी सर्वत्र विद्यमान है। डॉ. राज किशोर सिंह ने इस सन्दर्भ में लिखा है कि "वास्तव में आदर्शवाद की शाश्वता का प्रमुख कारण उसके मूल में निरन्तर कार्यशील रहने वाली वह प्रक्रिया है जो न केवल मानव मात्र को एक उच्चतर एवम महत्तर आदर्श की खोज और उपलब्धि की दिशा में प्रेरणा-सी देती रहती है अपितु स्वयं मूलनिर्देशिका होकर इन दोनो के बीच माध्यम का कार्य करती है।

उपर्युक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आदर्शवाद एक ऐसी विचारधारा है जो प्राचीनकाल से लेकर आज तक समान रूप से काव्य या साहित्य के महत्व की साधन बनी हुई है। वैचारिक रूप से आदर्शवाद का पर्याप्त महत्व भी है किन्तु कुछ आलोचकों ने इस विचारधारा पर यह आक्षेप भी किया कि आदर्शवाद जीवन की यथार्थ भावभूमि से हटकर पूर्णतया कल्पना की भावभूमि पर विचरण करता है। यह व्यवहारिक जगत की नही बल्कि कल्पना-लोक की सर्जना है अतः यह मात्र सैद्धान्तिक है इसका व्यवहारिक महत्व नही है। समष्टि रूप से विचार करने पर यह ज्ञात होता है कि आदर्शवाद में यथार्थ की पूर्ण उपेक्षा नही बल्कि जो त्रुटियाँ आदि है आदर्शवादी साहित्यकार अपनी कल्पना से उनका निदान प्रस्तुत कर आदर्श की कल्पना करता है। इस प्रकार आदर्शवाद यथा का उदात्तीकरण करता है। वह जीवन की वास्तविकता

को अनदेखा नहीं करता बल्कि उन पर दृष्टिपात करते हुए उन्हें उदात्त भावभूमि पर ले जाने का प्रयास करता है। अन्त में सुश्री महादेवी वर्मा (प्रसिद्ध हिन्दी कवयित्री, साहित्यकार) के शब्दों में कहा जा सकता है - "आदर्श हमारी दृष्टि की मलिन संकीर्णता धोकर, उसे बिखरे यथार्थ के भीतर दिये हुए सामंजस्य को देखने की शक्ति देता है; हमारी व्यष्टि में सीमित चेतना को मुक्ति के पंख देकर समष्टि तक पहुँचने की दिशा देता है और हमारी खण्डित भावना को अखण्ड जागृति देकर उसे जीवन की विविधता नाप लेने का वरदान देता है। जब आदर्श जल-भरे बादल की तरह आकाश का असीम विस्तार लेकर पृथ्वी के असंख्य रंगों, अनन्तरूपों में नहीं उतर सकता तब शरद के सूने मेघखण्ड के समान शून्य का धब्बा बनना रहना ही इसका लक्ष्य हो जाता है।"

÷ आदर्शवाद में वर्णित ज्ञान का सार ÷

आदर्शवाद के अनुसार ज्ञान का सार 'मन' (Mind), चेतना (Consciousness), और शाश्वत विचारों (Eternal ideas) में निहित है। यह दर्शन भौतिक वस्तुओं से अधिक विचारों, मूल्यों (सत्य, शिव, सुन्दर) और आध्यात्मिक सत्ता को वास्तविक मानता है। ज्ञान का अन्तिम उद्देश्य आत्मानुभूति के माध्यम से सत्यं, शिवं, सुन्दरं को प्राप्त करना है।

आदर्शवाद में ज्ञान के सार के मुख्य बिन्दु :-

- विचार ही यथार्थ (Ideas are Reality):
प्लेटो के अनुसार, ज्ञान स्थिर विचारों या रूपों (forms) का बोध है न कि लगातार बदलने वाले भौतिक जगत का।

- मन की प्रधानता (Primacy of Mind):
वास्तविक ज्ञान इन्द्रियों से नहीं बल्कि मन की सक्रियता और बुद्धि से प्राप्त होता है। अनुभव मानसिक संवेदनाओं की उपज है।

- आध्यात्मिक और सार्वभौमिक (Spiritual and Universal)
ज्ञान का केन्द्र आत्मा है। अन्तिम ज्ञान परमेश्वर या विश्व मन (Universal Mind) के विचारों को समझना है।

- शाश्वत मूल्य (Eternal Values):
ज्ञान व्यक्ति को शाश्वत नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की ओर ले जाता है।

- स्वयं को जानना (Self-Realization):
ज्ञान का मतलब है अपनी वास्तविक, मानसिक और आध्यात्मिक समता को पहचानना।

संक्षेप में आदर्शवाद में ज्ञान का सार बौद्धिक तार्किकता और आत्मानुभूति के माध्यम से सर्वोच्च आत्मिक सत्य की प्राप्ति है।

∴ आदर्शवादी ज्ञान अपरिहार्य क्यों ? ∴

(अथवा)

∴ आदर्शवाद पर आधारित ज्ञान की अनिवार्यता ∴

आदर्शवाद पर आधारित ज्ञान की अभिव्यक्ति के जनक प्राचीन यूनानी विद्वान 'प्लेटो' है। जिन्होंने विचारो को परम सत्य माना और बताया कि भौतिक जगत केवल विचारो की छाया है। आधुनिक आदर्शवाद के जनक इमैनुअल कांट है। प्लेटो ने अपनी पुस्तक 'रिपब्लिक' में आदर्शवाद की रुपरेखा प्रस्तुत की। अन्य प्रमुख आदर्शवादी विचारको में हीगल, फ्रोबेल आदि उल्लेखनीय है। सभी आदर्शवादी विचारको ने आदर्शवाद पर आधारित ज्ञान को अपरिहार्य बताया है।

आदर्शवाद पर आधारित ज्ञान की अनिवार्यता मानव जीवन को आध्यात्मिक, नैतिक और बौद्धिक रुप से उन्नत बनाने में है। यह सत्य शिव सुंदरम के शाश्वत मूल्यों, आत्म अनुशासन और उच्च आदर्शो के माध्यम से व्यक्तित्व विकास पर जोर देता है। यह ज्ञान भौतिकवाद के बजाए मन और विचारों की प्रधानता को स्थापित करता है। जो समग्र कल्याण के लिए आवश्यक है।

आदर्शवादी ज्ञान की अपरिहार्यता और प्रासंगिकता के मुख्य बिन्दु :-

- नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का आधार :

वर्तमान समय में जब शिक्षा तकनीकी और भौतिकवादी हो रही है

आदर्शवाद शिक्षार्थियों को सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों से अवगत कराने के लिए आवश्यक है।

- **आत्मानुभूति:**
आदर्शवाद का मानना है कि शिक्षा का अन्तिम उद्देश्य 'आत्मानुभूति' है, यानी मनुष्य अपनी सर्वोच्च शक्तियों और क्षमताओं को पहचान सके।

- **सत्य, शिवम, सुंदरम की प्राप्ति:**
यह दर्शन सत्य, अच्छाई और सुंदरता जैसे शाश्वत मूल्यों को विकसित करने पर जोर देता है जो मानव जीवन को उच्च और सार्थक बनाते है।

- **शिक्षक का उच्च स्थान:**
आदर्शवादी शिक्षा में शिक्षक को 'माली' और छात्र को एक 'कोमल पौधे' के रूप में देखा जाता है, जहाँ शिक्षक का काम बच्चे का के आध्यात्मिक विकास को सही दिशा देना है।

- **व्यक्ति-तत्व का उत्कर्ष:**
आदर्शवाद के अनुसार मनुष्य का व्यक्तित्व ईश्वर की सर्वोत्तम रचना है और शिक्षा के माध्यम से इसका पूर्ण विकास करना अनिवार्य है।

- मनुष्य में नैतिक चरित्र का निर्माण :

यह दर्शन स्पष्ट नैतिक और तार्किक सोचने की क्षमता विकसित करता है जो समाज को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक है।

संक्षेप में आदर्शवादी ज्ञान न केवल ज्ञान अर्जित करने का एक तरीका है बल्कि यह जीवन को उच्च आदर्शों की ओर ले जाने का एक दर्शन भी है जो मानव के मानसिक और आध्यात्मिक उत्थान के लिए अनिवार्य (अपरिहार्य) है।

• • • • •

Question-2 Analyse the function of education within the framework of Social Change.

(सामाजिक परिवर्तन के सन्दर्भ में शिक्षा के कार्य का विश्लेषण करें।)

'शिक्षा' अन्य अनेक सामाजिक संरचनाओ की तरह दोहरी प्रकृति की है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक मुलभूत साधन और कारक है, जो सामाजिक रूपान्तरण के ढाँचे के भीतर कार्य करते हुए दृष्टिकोण व्यवहार और सामाजिक संरचनाओं को परिवर्तित करती है। इसे आधुनिकीकरण के एक शक्तिशाली हालांकि एकमात्र नही, उपकरण के रूप में मान्यता प्राप्त है। जो समाज को कठोर परम्पराओं से दूर होकर प्रगति की ओर बढ़ने में सक्षम बनाता है।

सामाजिक परिवर्तन के सन्दर्भ में शिक्षा के कार्यो का विश्लेषण निम्न लिखित है:

1. सांस्कृतिक परिवर्तन और आधुनिकीकरण का कारण:

- सोच को आकार देना:

शिक्षा मानव व्यवहार और दृष्टिकोण को बदलती है। अंधविश्वास, हठधर्मिता और पूर्वाग्रही सोच को वैज्ञानिक, तर्कसंगत और वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से प्रतिस्थापित करती है।

- **संस्कृति का संचरण और रूपान्तरण :** शिक्षा सांस्कृतिक मूल्यों (रीति-रिवाजों, परम्पराओं) को संरक्षित और अगली पीढ़ी तक पहुँचाते हुए साथ ही साथ उन्हें आधुनिक प्रगतिशील और लोकतान्त्रिक मूल्यों को अपनाने के लिए परिष्कृत भी करती है।

- **समाजीकरण :** यह समाजीकरण के प्राथमिक कारक के रूप में कार्य करता है, युवाओं को मौजूदा सामाजिक व्यवस्था में ढलने के लिए तैयार करता है और साथ ही उन्हें इसे बदलने के लिए आवश्यक साधन भी प्रदान करता है।

2. सामाजिक सुधार और सशक्तिकरण के लिए उत्प्रेरक :

- **परिवर्तन की इच्छा उत्पन्न करना :** शिक्षा, दहेज, जातिवाद और असमानता जैसी सामाजिक बुराईयों के बारे में जागरूकता बढ़ाती है, जिससे वंचित लोगो को बेहतर जीवन के लिए प्रयास करने और अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए प्रोत्साहन मिलता है।

- **हाशिए पर पड़े समूहों का सशक्तिकरण :** यह समाज के शोषित और पिछड़े वर्गों को कौशल और ज्ञान तक पहुँच प्रदान करके सामाजिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है जिससे असमानताएं कम होती है।

- नेतृत्व विकास:
शिक्षा ऐसे नेताओं (जैसे विवेकानन्द, गाँधी जी जैसे सुचारक) को तैयार करती है जो सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्र निर्माण को आगे बढ़ाते है।

3. आर्थिक और तकनीकी विकास का इंजन:

- कौशल विकास:
शिक्षा व्यक्तियो को औद्योगीकरण और आर्थिक विकास के लिए आवश्यक तकनीकी ज्ञान से लैस करती है।

- आर्थिक गतिशीलता:
यह व्यक्तियों को सामाजिक स्तर पर ऊपर चढ़ने, गरीबी के चक्र को तोड़ने और राष्ट्रीय उत्पादकता को बढ़ाने में सक्षम बनाती है।

4. संरचनात्मक और राजनीतिक परिवर्तन का साधन:

- लोकतन्त्र को स्थिर करना:
शिक्षा नागरिक भावना और जिम्मेदारी को बढ़ावा देती है जिससे नागरिक लोकतन्त्र में भाग लेने, सोच-समझकर निर्णय लेने और नेताओं को जवाबदेह ठहराने में सक्षम होते है।

- राष्ट्रीय एकता:
राष्ट्रीय पहचान की भावना को बढ़ावा देकर शिक्षा विभिन्न जाति, धर्म और भाषाई समूहो के बीच की खाई को पाटने में मदद करती है।

5. दोहरी भूमिका: संरक्षण बनाम नवाचार-

शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के बीच संबंध जटिल है क्योकिं शिक्षा एक रुढ़िवादी और एक क्रान्तिकारी शक्ति दोनो हो सकती है।

- एक संरक्षक के रूप में:
यह छात्रो को वर्तमान पारम्परिक और कभी-कभी असमान मानदण्डो में ढालकर यथास्थिति बनाए रखता है।

- परिवर्तन के एक सूत्र के रूप में:
यह आलोचनात्मक सोच और मौजूदा मानदण्डो पर सवाल उठाने को प्रोत्साहित करता है, जिससे सामाजिक बंधनो के खिलाफ विद्रोह को बढ़ावा मिलता है। शिक्षा हमें माजती है तथा अपनी कमियो को दूर करने की ओर इंगित भी करती है। शिक्षा परिवर्तन की आधार शिला भी तैयार करती है।

ः कार्यों का सारांश ः

- दृष्टिकोण परिवर्तन में सहायता: तर्कसंगत और आधुनिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना।
- परिवर्तन की इच्छा उत्पन्न करना: लोगो को सुधार की आवश्यकता के प्रति जागरूक करना।
- सामाजिक परिवर्तन को अपनाना: समाज की नई वास्तविकताओं के अनुरूप ढलने में मदद करना।
- परिवर्तन के प्रतिरोध पर काबू पाना: नए विचारो की स्वीकृति को सुगम बनाना।

अन्त मे जैसाकि नेल्सन मंडेला ने कहा था "शिक्षा दुनिया को बदलने का सबसे शक्तिशाली हथियार है।" हालांकि, प्रभावी बदलाव के लिए इसे व्यापक सामाजिक-आर्थिक नीतियो द्वारा समर्थित और समन्वित किया जाना चाहिए।

सामाजिक परिवर्तन के सन्दर्भ में शिक्षा एक सशक्त उपकरण है जो न केवल मौजूदा सामाजिक परिवर्तनो का मूल्यांकन करती है बल्कि विकासशील और सकारात्मक बदलावो को बढ़ावा भी देती है। यह पुरानी रूढ़िवादी परम्पराओ के स्थान पर आधुनिक तार्किक और प्रगतिशील सोच को बढ़ावा देकर जाति, लिंग व वर्ग आधारित असमानताओं को दूर करने और समाज में एकता व सशक्तिकरण स्थापित करने का

प्रमुख कार्य करती है।

शिक्षा के अन्य कार्य :

- **मूल्यों का संरक्षण और हस्तानान्तरण :** शिक्षा समाज की सांस्कृतिक परम्पराओं, रीति-रिवाजो और मूल्यों का संरक्षण करती है और उन्हे अगली पीढ़ी तक पहुचाती है।

- **वांछित परिवर्तनो को बढ़ावा देना :** यह सामाजिक सुधार आन्दोलनो (जैसे बाल-विवाह, दहेज प्रथा को कम करना) को बढ़ावा देती है और तार्किक सोच विकसित करती है।

- **सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ-चेतना :** शिक्षा लोगो को दहेज, जातिवाद, नशा, भ्रष्टाचार और बाल श्रम जैसी सामाजिक बुराईयो के प्रति जागरुक करती है और उनसे लड़ने के लिए प्रेरित करती है।

- **समानता और समावेशन :** यह शिक्षा के माध्यम से जाति, लिंग, वर्ग और विकलांगता के आधार पर भेदभाव को कम करती है, जिससे समाज में सभी को समान अवसर मिले।

- **आर्थिक और तकनीकी विकास :**

तकनीकी और व्यवसायिक शिक्षा के माध्यम से नए रोजगार और कौशल प्रदान करती है। जो सामाजिक - आर्थिक ढाँचे को आधुनिक और प्रगतिशील बनाता है।

- **परिवर्तनो के प्रतिरोध को कम करना :**

शिक्षा लोगो को नए और बेहतर विचारों को अपनाने के लिए तैयार करती है जिससे समाज में परिवर्तन के प्रति प्रतिरोध कम होता है।

- **व्यक्तित्व का विकास और समाजीकरण :**

यह व्यक्तियों को जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित करती है जो बदलते समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप व्यवहार कर सके।

निष्कर्ष :

संक्षेप में हम कह सकते है कि शिक्षा न केवल समाज में होने वाले बदलावो को समझने मे मदद करती है बल्कि यह एक उत्प्रेरक के रूप में सकारात्मक और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण की दिशा में आवश्यक मार्गदर्शन भी करती है। सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह व्यक्ति की मानसिक क्षमता को निखारने में सहायक होती है। शिक्षा व्यक्ति के सोचने , व्यवहार करने , दृष्टिकोण और जीवन

शैली को पूर्णतः बदल देती है।

सामाजिक परिवर्तन लाने में शिक्षको की भूमिका महत्वपूर्ण है। उन्हे अपने कर्तव्य का निर्वाह करना चाहिए। शिक्षक के बिना सामाजिक परिवर्तन केवल कल्पना मात्र है। शिक्षक को समाज की आवश्यकताओं और सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति एवं दिशा का ज्ञान होना चाहिए। समाज में सामाजिक परिवर्तन के वाहक के रूप में शिक्षक की भूमिका आदरणीय। उल्लेखनीय है।

अन्त में यह कहना समीचीन होगा कि किसी भी प्रकार के परिवर्तनो के लिए शिक्षा, शिक्षक, विद्यालय के साथ-साथ समाज के सभी व्यक्तियो की भूमिका एवं तत्परता भी आवश्यक है। समाज का सार्वांगीण विकास बिना सभी के सहयोग के कठिन है, सभी का योगदान अपेक्षित व अपरिहार्य है तभी हम अच्छे सामाजिक परिवर्तनो के साक्षी बन सकते है।